# तत्त्वार्थसूत्र

## सामान्य परिचय

## मूलसूत्र - अरिहंत भगवान को गुणप्रधान नमस्कार

# मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
# ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

# विशेष परिचय - अर्पण

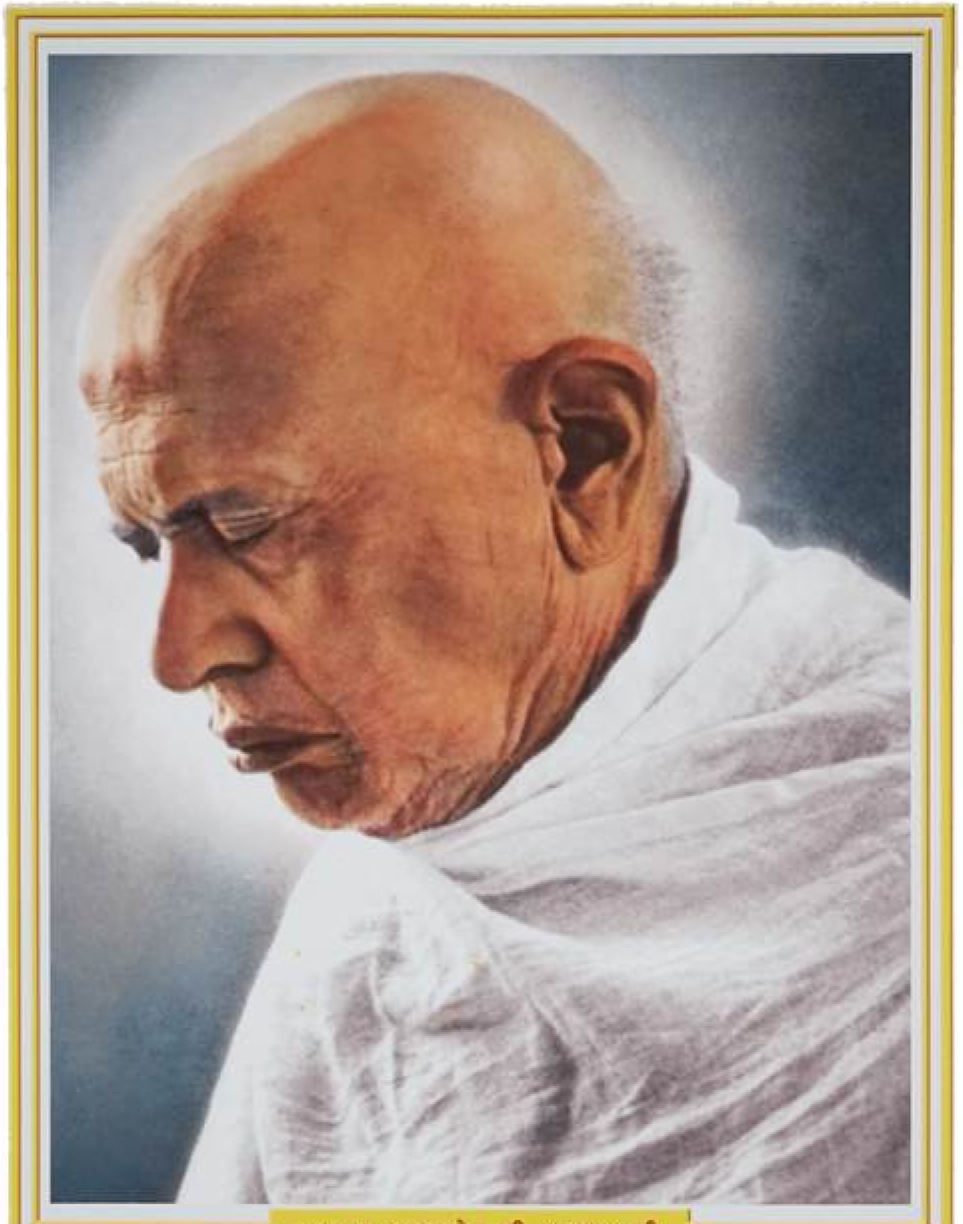

પરમ પૂ. સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

कल्याणमूर्तिश्रीसदगुरुदेवको
जिन्होंने इस पामर पर अपार उपकार किया है। जो स्वयं
मोक्षमार्ग में विचर रहे हैं और अपनी दिव्य श्रुतधारा
द्वारा भरतभूमि के जीवों को सततरूप से मोक्षमार्ग
दर्शा रहे हैं जिनकी पवित्र वाणी में मोक्षमार्ग के
मूलरूप कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शन का माहात्म्य
निरन्तर बरस रहा है और जिनकी परम कृपा से
यह ग्रन्थ तैयार हुआ है—ऐसे कल्याणमूर्ति
सम्यग्दर्शन का स्वरूप समझानेवाले
कल्याणमूर्ति श्री सद्‌गुरुदेव को यह
ग्रन्थ अत्यन्त भक्तिभाव से
अर्पण करता हूँ......

*– दासानुदास रामजी*

# मंगलाचरण करने का कारण

- ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए
- शिष्टाचार के पालन के लिए
- नास्तिकता के परिहार के लिए
- पुण्य की प्राप्ति के लिए
- उपकार का स्मरण करने के लिए

# प्रस्तावना के मुख्य बिन्दु

१। शास्त्र के कर्ता तथा शास्त्र की टीकाएँ

२। शास्त्र के नाम की सार्थकता

३। शास्त्र के विषय

४। शास्त्र में कथन पद्धति

५। शास्त्र की टीका के आधारभूत शास्त्र

६। पूज्य गुरुदेवश्री का मार्गदर्शन

७। मुमुक्षु पाठकों को सूचना

# सामान्य परिचय

## १। तत्त्वार्थसूत्र - रचयिता: श्री उमास्वामी आचार्य

- यह संस्कृत भाषा में सर्व प्रथम जैन ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ सूत्रात्मक शैली में लिखा गया है।
- जैन साहित्य का आदि सूत्र ग्रन्थ है।
- सूत्र-व्याकरण के अनुसार कम से कम शब्दों में अर्थ बता दे उसे सूत्र कहते है।
- तत्त्वार्थसूत्र की कई [ २२ ] टीकाएँ है।

# रचयिता: श्री उमास्वामी आचार्य

- कुन्दकुन्द आचार्य के पट्ट शिष्य
- काल: वीर निवार्ण सं॰ [ ५६५-६२९ ], विक्रम सं॰ [ ९५-१५९ ], [ ईसवी [ ३९-१०३ ] ][१]
- प्राचीन जैनाचार्य अपने बारे में कुछ नहीं लिखते थे। अतएव आपके जीवन परिचय से जैन समाज अपरिचित है।

[१] जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश ६.३२८

# तत्त्वार्थसूत्र - टीकाएँ

| काल [ ईसवी ][1] | आचार्य का नाम | टीका का नाम | श्लोक प्रमाण |
|---|---|---|---|
| १२०-१८५ | आचार्य समन्तभद्र | गंधहस्ति महाभाष्य | ८४००० |
| ५वीं शताब्दी | आचार्य पूज्यपाद | सर्वार्थसिद्धि | १२००० |
| ६२०-६८० | आचार्य अकलंकदेव | तत्त्वार्थ राजवार्तिक | १६००० |
| ७७५-८४० | आचार्य विद्यानन्दि | तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक | २०००० |
| ९०५-९५५ | आचार्य अमृतचंद्र | तत्त्वार्थसार | ६८६ |
| [1] जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश ६.३२८ | ओर कई आचार्यों की टीकाएँ है... | | |
| काल [ ईसवी ] | विद्वान का नाम | टीका का नाम | श्लोक प्रमाण |
| १७९५-१८६७[2] | पं. सदासुखदासजी | अर्थप्रकाशिका | - |
| १८८१-१९८५ | मु. रामजीभाई दोशी | मोक्षशास्त्र | - |
| [2] जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश ६.३२८ | ओर कई विद्वानों की टीकाएँ है... | | |

## पाठशाला के लिए आधार

- इस पाठशाला के लिए आधार *मु॰ रामजीभाई दोशी* द्वारा रची गई *मोक्षशास्त्र* टीका है।
- उचित स्थानों पर अन्य आवश्यक ग्रन्थ का आधार लिया जाएगा।
- समीचीन विद्वानों का उचित मार्गदर्शन लिया जाएगा।

# २। शास्त्र के नाम की सार्थकता

- प्रयोजनभूत तत्त्वों के सटीक अर्थ दर्शाये गये है।
- पथभ्रान्त संसारी जीवों को आचार्यदेवने मोक्षमार्ग दर्शाया है।
- प्रारंभ में ही '**सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकता को मोक्षमार्ग बताकर** ', विस्तार से वर्णन किया है।
- इस प्रकार मोक्षमार्ग का प्ररूपण होने से शास्त्र का '**मोक्षशास्त्र**' नाम सार्थक है।
- जीव-अजीवादि सात तत्त्वों का वर्णन होने से '**तत्त्वार्थसूत्र**' नाम भी प्रसिद्ध है।

# ३। शास्त्र के विषय

| क्र० | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १० | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २० | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३० | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४० | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५० | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६० | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७० | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८० | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९० | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०० | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
|  | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

# विशेष परिचय - शास्त्र की प्रस्तावना

## शास्त्र के विषय

| क्र॰ | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १॰ | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २॰ | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३॰ | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४॰ | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५॰ | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६॰ | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७॰ | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८॰ | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९॰ | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०॰ | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
| | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

**प्रस्तावना के पश्चात् अध्यायों का विशेष स्वरूप लिया जाएगा।**

## ४। शास्त्र में कथन पद्धति - नयों का सामान्य स्वरूप

- नय
  - द्रव्यार्थिक नय
    - - द्रव्य मुख्य,
    - - पर्याय गौण
  - पर्यायार्थिक नय
    - - पर्याय मुख्य,
    - - द्रव्य गौण

# शास्त्र में कथन पद्धति

- इस शास्त्र में पर्यायार्थिक नय की मुख्यता से वस्तुस्वरूप का कथन है।
- अर्थात् - एक द्रव्य का दुसरे द्रव्य के साथ संबंध भी बताया है।
- वह मात्र निमित्त - नैमित्तिक संबंध है।
- भिन्न द्रव्यों में कर्ता - कर्म संबंध किंचित् मात्र भी नहीं हो सकता है।
- जहाँ कार्य और उनके निमित्त का ज्ञान कराना हो - वहाँ निमित्त की मुख्यता से कथन करने में आता है।
- इस शास्त्र में भी निमित्त की मुख्यता से बहोत कथन है।

**यर्थाथत: एक द्रव्य दुसरे द्रव्य का कुछ नहीं कर शकता है। वास्तव में ऐसा ही वस्तुस्वरूप है।**

# शास्त्र में कथन पद्धति - पर्यायार्थिक नय के कथन का प्रयोजन

- दृष्टांत - साधकदशा की भूमिकानुसार राग और निमित्त-नैमित्तिकपने का सुमेल होता है। उससे विरुद्ध नहीं होता, इस तथ्य का ज्ञान कराने को व्यवहार नय और उसके विषय का कथन होता है।
- व्यवहार नय के प्रतिपादक सूत्रों की टीका में उस कथन के भावों को स्पष्ट किया है और निश्चय नय का स्वरूप समझाया गया है।
- टीका के अभ्यास से धर्म जिज्ञासुओं को सत्यस्वरूप समजने में सुगमता होगी।

# ५ । शास्त्र की टीका के आधारभूत शास्त्र

- श्री सर्वार्थसिद्धि
- श्री तत्त्वार्थ राजवार्तिक
- श्री तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक
- श्री अर्थप्रकाशिका
- श्री समयसार
- श्री प्रवचनसार
- श्री पंचास्तिकायसंग्रह
- श्री नियमसार
- श्री धवलाशास्त्र
- श्री मोक्षमार्ग प्रकाशक
- और अन्य सत् शास्त्र

# ६। पूज्य गुरुदेवश्री का मार्गदर्शन

- परमपूज्य सत्पुरुष अध्यात्मयोगी परमसत्य जैनधर्म के मर्मज्ञ एवं अद्वितीय उपदेशक श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से ही यह टीका बनी है।
- उन्होंने स्वयं इस शास्त्र को पढकर, इस में यथोचित मार्गदर्शन एवं सूचन दिए है।
- जो शास्त्र में संपूर्ण रूप से समाहित कर के इस टीका का प्रकाशन हुआ है।
- इस तरह यह टीका संपूर्णतः उनके आशीष का ही फल है।

## ७। मुमुक्षु पाठकों को सूचना

- शास्त्र का अध्ययन:
  - धर्मबुद्धि से करना
  - मध्यस्थभाव से करना
  - सूक्ष्म दृष्टि से करना

**सत् शास्त्र का धर्मबुद्धि द्वारा अभ्यास करना सम्यग्दर्शन का कारण है**

# तत्त्वार्थसूत्र

## विशेष परिचय

# प्रस्तावना के मुख्य बिन्दु

१। शास्त्र के कर्ता तथा शास्त्र की टीकाएँ - [ सामान्य परिचय स्लाईड: २ - ४ ]

२। शास्त्र के नाम की सार्थक्ता

३। शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

४। शास्त्र में कथन पद्धति

५। शास्त्र की टीका के आधारभूत शास्त्र

६। पूज्य गुरुदेवश्री का मार्गदर्शन

७। मुमुक्षु पाठकों को सूचना

# ३। शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

| क्र० | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १० | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २० | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३० | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४० | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५० | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६० | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७० | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८० | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९० | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०० | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
| | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय १

- प्रथम अध्याय में ३३ सूत्र है।
- उसमें पहले ही सूत्र में निश्चयसम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, तीनों की एकता को मोक्षमार्गरूप से बतलाकर
- फिर निश्चय सम्यग्दर्शन का विवेचन किया है।
- और निश्चय सम्यग्ज्ञान का विवेचन किया है।

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय २

- दूसरे अध्याय में ५३ सूत्र हैं;
- उसमें जीवतत्त्व का वर्णन है।
- जीव के पाँच असाधारण भाव,
- जीव का लक्षण
- तथा इन्द्रिय, योनि, जन्म, शरीरादि के साथ के सम्बन्ध का विवेचन किया है।

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ३ , ४

- तीसरे अध्याय में ३९ तथा चौथे अध्याय में ४२ सूत्र हैं।
- इन दोनों अध्यायों में संसारी जीवों को रहने के स्थानरूप अधो, मध्य और ऊर्ध्व – इन तीन लोकों का वर्णन है
- और नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य तथा देव – इन चार गतियों का विवेचन है।

# शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

| क्र॰ | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १॰ | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २॰ | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३॰ | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४॰ | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५॰ | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६॰ | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७॰ | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८॰ | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९॰ | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०॰ | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
| | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

# विशेष परिचय - शास्त्र की प्रस्तावना

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ५

- पाँचवें अध्याय में ४२ सूत्र हैं
- और उसमें अजीवतत्त्व का वर्णन है;
- इसलिए पुदगलादि अजीवद्रव्यों का वर्णन किया है।
- तदुपरान्त द्रव्य, गुण, पर्याय के लक्षण का वर्णन बहुत संक्षेप में विशिष्ट रीति से किया है – यह इस अध्याय की मुख्य विशेषता है।

# शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

| क्र॰ | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १॰ | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २॰ | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३॰ | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४॰ | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५॰ | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६॰ | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७॰ | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८॰ | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९॰ | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०॰ | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
| | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

# विशेष परिचय - शास्त्र की प्रस्तावना

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ६

- छठवें अध्याय में २७ सूत्र हैं,
- इस अध्याय में आस्रवतत्त्व का वर्णन है।
- प्रथम, आस्रव के स्वरूप का वर्णन करके,
- फिर आठों कर्मों के आस्रव के कारण बतलाये हैं।

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ७

- सातवें अध्याय में ३९ सूत्र हैं,
- इस अध्याय में आस्रवतत्त्व का वर्णन है।
- सातवें अध्याय में शुभास्रव का वर्णन है,
- उसमें बारह व्रतों का वर्णन करके उसका आस्रव के कारण में समावेश किया है।
- इस अध्याय में श्रावकाचार के वर्णन का समावेश हो जाता है।

# शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

| क्र० | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १० | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २० | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३० | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४० | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५० | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६० | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७० | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८० | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९० | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०० | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
| | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ८

- आठवें अध्याय में २६ सूत्र हैं
- और उसमें बन्धतत्त्व का वर्णन है।
- बन्ध के कारणों का
- तथा उसके भेदों का
- और स्थिति का वर्णन किया है।

# शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

| क्र॰ | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १॰ | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २॰ | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३॰ | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४॰ | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५॰ | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६॰ | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७॰ | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८॰ | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९॰ | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०॰ | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
| | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ९

- नववें अध्याय में ४७ सूत्र हैं
- और उसमें संवर तथा निर्जरा इन दो तत्त्वों का बहुत सुन्दर विवेचन है
- तथा निर्ग्रन्थ मुनियों का स्वरूप भी बतलाया है;
- इसलिए इस अध्याय में निश्चयसम्यक्चारित्र के वर्णन का समावेश हो जाता है।

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - मोक्षमार्ग की पूर्णता

- पहले अध्याय में निश्चयसम्यग्दर्शन तथा निश्चयसम्यग्ज्ञान का वर्णन किया था
- और इस नववें अध्याय में निश्चयसम्यक्चारित्र का ( संवर, निर्जरा का ) वर्णन किया;
- इस प्रकार सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्ररूप मोक्षमार्ग का वर्णन पूर्ण होता है।

# विशेष परिचय - शास्त्र की प्रस्तावना

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

| क्र० | अध्याय | विषय | सूत्र संख्या |
|---|---|---|---|
| १० | १ | जीव तत्त्व | ३३ |
| २० | २ | जीव तत्त्व | ५३ |
| ३० | ३ | जीव तत्त्व | ३९ |
| ४० | ४ | जीव तत्त्व | ४२ |
| ५० | ५ | अजीव तत्त्व | ४२ |
| ६० | ६ | आस्रव तत्त्व | २७ |
| ७० | ७ | आस्रव तत्त्व | ३९ |
| ८० | ८ | बंध तत्त्व | २६ |
| ९० | ९ | संवर व निर्जरा तत्त्व | ४७ |
| १०० | १० | मोक्ष तत्त्व | ९ |
| | १० अध्याय | कुल संख्या | ३५७ |

# विशेष परिचय - शास्त्र की प्रस्तावना

## शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय १०

- दसवें अध्याय में नव सूत्रों द्वारा
- मोक्षतत्त्व का वर्णन करके
- श्री आचार्यदेव ने यह शास्त्र पूर्ण किया है।

# शास्त्र के विषय - तत्त्वज्ञान का भण्डार

- निश्चयसम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप मोक्षमार्ग
- प्रमाण-नय-निक्षेप
- जीव-अजीवादि सात तत्त्व
- ऊर्ध्व-मध्य-अधोः तीन लोक
- चार गतियाँ
- छह द्रव्य और
- द्रव्य-गुण-पर्याय

# तत्त्वार्थसूत्र

## विशेष परिचय पूर्ण

# प्रस्तावना के मुख्य बिन्दु

१। शास्त्र के कर्ता तथा शास्त्र की टीकाएँ - [ सामान्य परिचय स्लाईड: २ - ४ ]

२। शास्त्र के नाम की सार्थक्ता

३। शास्त्र के विषय

४। शास्त्र में कथन पद्धति

५। शास्त्र की टीका के आधारभूत शास्त्र

६। पूज्य गुरुदेवश्री का मार्गदर्शन

७। मुमुक्षु पाठकों को विशेष सूचना

## ७। मुमुक्षु पाठकों को विशेष सूचना

- ( १ ) सम्यग्दर्शन से ही धर्म का प्रारम्भ होता है।
- ( २ ) निश्चय सम्यग्दर्शन प्रगट किये बिना किसी भी जीव को सच्चे व्रत, सामायिक, प्रतिक्रमण, तप, प्रत्याख्यानादि क्रियाएँ नहीं होती, क्योंकि वे क्रियाएँ पाँचवें गुणस्थान में शुभभावरूप से होती हैं।

## मुमुक्षु पाठकों को विशेष सूचना

- ( ३ ) शुभभाव, ज्ञानी और अज्ञानी दोनों को होता है, किन्तु अज्ञानी जीव ऐसा मानता है कि उससे धर्म होगा, अथवा वह शुभभावरूप व्यवहार करते-करते भविष्य में धर्म होगा; किन्तु ज्ञानियों को वह हेयबुद्धि से होने से, उससे ( शुभभाव से धर्म होगा )-ऐसा वे कभी नहीं मानते।

## मुमुक्षु पाठकों को विशेष सूचना

- ( ४ ) पूर्ण वीतरागदशा प्रगट न हो, वहाँ तक पद अनुसार शुभभाव आये बिना नहीं रहते, किन्तु उस भाव को धर्म नहीं मानना चाहिए और न ऐसा मानना चाहिए कि उससे क्रमशः धर्म होगा; क्योंकि वह विकार होने से अनन्त वीतराग देवों ने उसे बन्धन का ही कारण कहा है।

## मुमुक्षु पाठकों को विशेष सूचना

- ( ५ ) प्रत्येक वस्तु द्रव्य-गुण-पर्याय से स्वतन्त्र है; एक वस्तु दूसरी वस्तु का कुछ कर नहीं सकती; परिणमित नहीं कर सकती, प्रेरणा नहीं दे सकती, प्रभाव-असर-मदद या उपकार नहीं कर सकती; लाभ-हानि नहीं कर सकती, मार-जिला नहीं सकती, सुख-दुःख नहीं दे सकती- ऐसी प्रत्येक द्रव्य-गुण-पर्याय की स्वतन्त्रता अनन्त ज्ञानियों ने पुकार-पुकार कर कही है।

## मुमुक्षु पाठकों को विशेष सूचना

- ( ६ ) जिनमत में तो ऐसी परिपाटी है कि पहले निश्चयसम्यक्त्व होता है और फिर व्रत और निश्चयसम्यक्त्व तो विपरीत-अभिप्रायरहित जीवादि तत्त्वार्थश्रद्धान है, इसलिए ऐसा यथार्थ श्रद्धान करके सम्यग्दृष्टि होना चाहिए।

## मुमुक्षु पाठकों को विशेष सूचना

- ( ७ ) प्रथम गुणस्थान में जिज्ञासु जीवों को ज्ञानी पुरुषों के धर्मोपदेश का श्रवण, उनका निरन्तर समागम, सत्‌शास्त्र का अभ्यास, पठन–मनन, देवदर्शन, पूजा, भक्ति, दानादि शुभभाव होते हैं, किन्तु पहले गुणस्थान में सच्चे व्रत–तपादि नहीं होते।

# जिनवाणी स्तुति

# श्री महावीर भगवान की शासन परम्परा

## तत्त्वार्थसूत्र का उद्‌गम

# तत्त्वार्थसूत्र का उद्गम

जैन पुराणों की मंगलमय गाथा गाते है।
आचार्य परम्परा की अब लो कथा सुनाते है।।
सुनोजी मंगल जैन पुराण, यासो जीवन बने महान ...

जैन पुराणों की मंगलमय गाथा गाते है।
आचार्य उमास्वामी की अब कथा सुनाते है।।
सुनोजी मंगल जैन पुराण, यासो जीवन बने महान ...

जैन पुराणों की मंगलमय गाथा गाते है।
तत्त्वार्थसूत्र की अब लो कथा सुनाते है।।
सुनोजी मंगल जैन पुराण, यासो जीवन बने महान ...

## मोक्षशास्त्र टीका का उद्गम [1]

संवत् १९९९ में पूज्य गुरुदेवश्री का चातुर्मास राजकोट था उस समय 'सनातन जैन ब्रह्मचर्याश्रम' के विद्यार्थियों को मोक्षशास्त्र सिखाया जाता था, उस समय आपश्री को ऐसी सद्भावना जागृत हुई कि इस शास्त्र के वास्तविक अन्तर रहस्य को यदि गुजराती भाषा में प्रसिद्ध किया जाये तो सर्व जिज्ञासु सरलता से उसका लाभ भी ले सकें और उनकी इस सद्भावना के फलरूप ही आज यह विस्तृत ग्रन्थ प्रसिद्ध हुआ है।

[1] मोक्षशास्त्र - प्रकाशकीय निवेदन - चतुर्थ आवृत्ति

# सहर्ष आभार

## मोक्षशास्त्र की पाठशाला के प्रेरणास्तोत्र एवं सहयोगी

- वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु, पू. गुरुदेवश्री आदि ज्ञानी धर्मात्मा
- आदरणीय समस्त सहयोगी विद्वानगण
- श्री सीमन्धरस्वामी दि. जिनमंदिर, विले पार्ला के समस्त ट्रस्टीगण एवं मुमुक्षुगण
- श्री दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़
- श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
- **www.atmadharma.com**
- भारतीय ज्ञान पीठ